५०२/२६९

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी - १५ जून, २०१४)

(समय : दोपहर २:०० से ४:१५)

सत्संग परिचय - २

सूचना : प्रश्न के बाद में दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं । **कुल गुण : ७५**

विभाग-१ : किशोर सत्संग परिचय - प्रथम संस्करण, फरवरी - १९९९

प्र.१ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''हम अक्षरपुरुषोत्तम के लिए सबकुछ छोड़कर साधु बने हैं और उसके लिए समस्त कष्टों को सहन करते हैं ।'' (३०)

२. ''सीधा (खाद्य सामग्री) पूरा नहीं पड़ेगा ।'' (४५-४६)

३. ''ओ बेटे! हमारे साधुओं को मत मारो ।'' (७५-७६)

प्र.२ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. मंत्री-पुत्र की बात सुनकर नाग शान्त खड़ा हो गया । (१६)

२. सुन्दरजी बढ़ई साधु हो गये । (६०)

३. श्रीजीमहाराज ने रामानुजानन्द स्वामी और छोटे गोपालानन्द स्वामी को बालक नथु का परिचय करवाया । (३५-३७)

प्र.३ ''मूर्तिपूजा'' (१३-१५) - **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** [५]

प्र.४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [५]

१. स्वरूपानन्द स्वामी को किस ने कहाँ समाधि लगवाई ? (९१)

२. श्रीजीमहाराज ने वरताल मन्दिर का महंत किसको बनाया ? (७९)

३. विश्वासघात करने से क्या होता है ? (७)

४. काशीदास से श्रीजीमहाराज ने स्वीकार करने के बाद कितने वर्ष पश्चात् बोचासण में मंदिर हुआ ? (२९)

५. हिमराज शाह कौन थे ? (४७)

प्र.५ ''कल्याण के लिए .....'' (८३-८४) - **'स्वामी की बात' पूर्ण कीजिए और इसके बारे में निरूपण कीजिए ।** [५]

प्र.६ निम्नलिखित कीर्तन / अष्टक / श्लोक आदि को सूचनानुसार पूर्ण कीजिए । [८]

१. जरकसीओ जामो ..... मारे भावता रे । (८२)

२. आसन साधी ..... मटाडे जमनी । (६३)

३. निर्मानमोहा ..... पदमव्ययं तत् ॥ (९८)

४. विधिशंभु ..... भजे सदा ॥ (३४) - श्लोक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

विभाग-२ : प्रागजी भक्त - प्रथम संस्करण, नवम्बर - १९९८

प्र.७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''आपने मुझे कृतार्थ किया है ।'' (२०-२२)

२. ''मेरी पढ़ाई तो पहले ही पूरी हो चूकी है ।'' (१-२)

३. ''तुमने तो स्वामी के चारों थनों का अमृत पी लिया ।'' (५७-५८)

प्र.८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. गणपतभाई महुवा से भरुच आने के लिए नाव से लौटे । (५२)

२. पेटलाद में फौजदार ने संतों से कहा : 'भगतजी को छोड़ना मत ।' (३९-४०)

३. भगतजी ने आचार्य महाराज को भगवान के सुख के बारे में बात की । (५३)

प्र.९ 'संतत्व की कला' (१७, १९) - **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** [५]

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [५]

१. खांभड़ा में स्वामी ने सेवक के पास किस के लिए क्या मंगवाया ? (७)

२. स्वामी ऊना जाते थे, तब प्रागजी भक्त ने स्वामी से क्या प्रार्थना की ? (३०)

३. भगतजी ने वांसदा के दीवानजी को क्या वचन दिया ? (४७)

४. भगतजी ने संतों को किस की आज्ञा में रहने की आज्ञा की ? (४३)

५. महुवा के हरिभक्तोंने भगतजी का अनुसरण करते हुए कोन सी नदी पार की ? (६२)

(पृष्ठ पलटिये)

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किये गये पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर ''**सत्संग परिचय-२**'' परीक्षा दी है । निम्नलिखित बातें सही हैं, जो आपको विदित हो ।

दिनांक महीना साल

परीक्षार्थी का जन्म दिन :- ☐☐ ☐☐ ☐☐☐☐

परीक्षा दिनांक और परीक्षा का समय :

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर :

सूचना : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगत भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को वापस कर दें । सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा दे । (अपूर्ण विवरणवाली उपस्थिति स्लीपें मान्य नहि होंगी ।)

प्र.११ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **[६]**

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा ।

१. भगतजी महाराज ने गुरु की की हुई व्याख्या । (५९-६०)

(१) ☐ अन्तर का अज्ञान दूर करे वह गुरु ।

(२) ☐ जो अन्दर-बाहर से पवित्र हो वह गुरु ।

(३) ☐ जिनके दर्शन से मन स्थिर एकाग्र हो वह गुरु ।

(४) ☐ जो अपने शिष्यों के सभी दोषों को दूर करके शुद्ध कर दे, वह गुरु ।

२. जिन्हें एकान्तिक धर्म सिद्ध करना हो उन्हें । (४८)

(१) ☐ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन दृढ़ता से करना । (२) ☐ धारणां पारणां व्रत करना ।

(३) ☐ भगवान का एकाग्र होकर ध्यान करना । (४) ☐ निरन्तर भगवान का स्मरण करना ।

३. शिष्य की योग्यता की परीक्षा । (१०-११)

(१) ☐ मन्दिर की गहरी नींव कड़ी मेहनत करके खोदी ।

(२) ☐ रेत धोने और नींव भरने का काम अकेले ही पूरा किया ।

(३) ☐ चूने पर पानी डालते फिर उस चूने को गड्ढे में डालते ।

(४) ☐ पाँच दिन तक उन्होंने भट्ठी में चूने के पत्थर भरे ।

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । **[६]**

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे । अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : जूनागढ में अपूर्व सम्मान : जूनागढ के अमीन हरिभक्त आचार्य जटाशंकर ने अपने शिष्य मणिलाल भट्ट से कहा, ''यह जागा भक्त जैसे चमार खाँट के ऊपर बैठे हैं और आचार्य उसे दण्डवत् करते हैं ।''

उत्तर : जूनागढ में अपूर्व सम्मान : जूनागढ के **नागर** हरिभक्त **डॉ. उमियाशंकर** ने अपने **गुरु बालमुकुन्ददासजी** से **पूछा**, ''यह **प्रागजी भगत** जैसे **दरजी गद्दी के** ऊपर बैठे हैं और **संत** उसे दण्डवत् करते हैं ।''

१. **रुग्णता का आशीर्वाद माँगा :** मुझे तो अपना धाम के दर्शन करवाओ, अपनी गद्दी दो और मुझे सच्चा साधु बनाओ । (१०)

२. **भगतजी का मनमोहक व्यक्तित्व :** रावसाहब की धर्मपत्नी सविताबा को वड़ोदरा में लगातार सात दिन तक समाधि में श्रीजीमहाराज के साथ भगतजी के दर्शन हुए । (४१)

३. **अब मैं प्रागजी द्वारा प्रगट रहूँगा :** मैं इस स्थान पर चालीस वर्ष, आठ महीने और चार दिन रहा । अब गाँव गाँव हरिभकतों के साथ सत्संग करुँगा और गोंडल जाकर रहूँगा ।'' (३३)

४. **सत्संग से निष्कासित :** आचार्य महाराज ने घोषणा की प्रागजी को निष्कासित किया गया हैं, न कि इनके दाल और सब्जी को । वे तो उत्तम हैं, उसका सीधा स्वीकार कर लो । (३२)

५. **अक्षरधाम की कुंजी प्रागजी के पास :** गढ़डा में तो शामजी सब कुछ बन गया है और पार्षद ने तो अपने आपको उसके रूप में मिला दिया है और अब तो वे अपने शिष्य के वश में हैं । (२४)

६. **सद्गुरु गोपालानन्द स्वामी का संग :** प्रागजी भक्त दरजी का काम सीखने के लिए भावनगर गए । बाद में आचार्य महाराज के लिए सुन्दर टोपी और अंगरखा बनाया । (५)

* * *

सूचना : इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ६ जुलाई, २०१४ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखें हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राइटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद मानी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा ना जा सके ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें । परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

☞ **अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र नि:शुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।**

http://www.swaminarayan.org/satsangexams/pastpapers/index.htm